Dac. 1,26. = किम् oder क्तम् wie viel mehr, mit einer Negat. wie viel weniger: वैक्ताव्यं मम तावदीदशमपि स्नेकादराएँगाकास: पीडाते गिक्णां क्यं न् तनपाविश्लेषद्वःविर्नवैः Çix. 81. नास्य देवा न गर्न्धवा नास्रा न च रातसाः । कर्तुमारापणं शक्ता न कयं न व्हि मानवाः ॥ R.1,33,9. — 4) mit स्विद् wie - wohl? Cat. Bs. 12,3,1,1. MBH. 1,3636. 2,2422. 3,1088. 1352. fg. 12614. R. 2,21,60. कथमिव स्वित्त: सन्धते ÇAT. BR. 4,6,9,1.3. - 5) mit 및 국 (권국) a) auf keine Weise, in keinem Falle, durchaus nicht; als Verstärkung einer vorang. Negation: न लोकवृत्तं वर्तत वृत्तिक्-तो: क्यं च न M. 4, 11.34. 7, 104. 8, 20.43.300. 9, 60.86.215.328. 10, 59. 11,39. N. 4, 19. 10, 1. 13, 42. 18, 14. 26,22. BRAHMAN. 1, 17. R. 1,9,50. Viçv.3, 22. 11, 15. 14, 18. Bulg. P. 1,5, 19. तस्यावमानं कीरच्य मा स्म का-र्षी: क्यं च न MBn. in Best. Chr. 41,4. मनतिऋमणीया कि विधी राज-ন্দায় ব ন MBu. 11, 235. — b) auf irgend eine Weise, irgendwie, bei irgend einer Gelegenheit, in Folge von diesem oder jenem M. 5,143. 9, 135. 198. 203. 11, 158. MBu. 1, 6804. — c) mit Mühe: वृद्धेनात्पादिताः प्-त्रा मपा चैते क्यंचन R. 1,22,9. 67,4. क्यं क्यंचन dass. Vikr. 29, 15. — 6) mit चिद्र a) auf irgend eine Weise, auf welche Weise es auch sei: क्र-यंचित्प्रज्वलन्कामा जले सप्तं न मां दक्त् R. 5,75,7. क्यंचिद्प्यतिक्रामन् M. 3,90. mit einer Negat. auf keine Weise, durchaus nicht: उन्हा ऽपि ता नापहरित्वर्याचत् DRAUP. 5, 14. R. 1, 44, 11. 3, 13, 22. PANKAT. I, 383. न त् शस्त्रं ग्रहीप्यामि क्यंचिद्पि MBH. in BENF. Chr. 19,4. न क्यंचित्र auf keine Weise nicht d. i. durchaus: न अर्थाचिडि मे पापा न वध्या पे सु-रिद्रिष: A.c. 10, 17. पद्मा कदंचित auf welche Weise es auch sei M. 11, 220. Jagn. 1,208. 3,320. - b) mit einiger Anstrengung, mit Mühe, mit genauer Noth: क्यंचिद्र क्त्वीरी दंपती ती श्योत्तमम् MBH.13, 2797. प-श्य वैदेको ऋयंचित्सीम्य जीवति R. 3,24,20. 43,6. 5,57,12. वयं तु धत-राष्ट्रेण - विवासिता न रम्धाश वार्यचिद्वैवसंश्रयात् Hip. 1, 43. PANKAT. 9, 5. 43, 10. Kumaras. 3, 34. Kathas. 4, 38. 10, 39. Amar. 50. 75. Raga-TAR. 5, 134. 318. 415. क्यंचिद्पि जीवसीम् R. 6, 99, 50. क्यंचिखदि (es geschieht mit Mühe, dass) dass.: मन्दप्राणा ऋपं पत्ती क्रष्टांचिखिद जीवित 3,73,3. — c) ein wenig, ziemlich, einigermaassen: शक्ताला क्यंचिद्द ष्टा-वनतम्ाबी तिष्ठति Çâk. Ca. 63, 1. क्यंचिड्डत्याय 65, 1. Vika. 47, 19. सि-चयात्तेन कथंचित्स्तनमध्योच्क्वासिना ७. कथंचिद्गूरम् Катиль ५, ८०. कथंचि-इतिमाप्तवान् 104. Aman. 46. — 7) mit श्रीप a) auf irgend eine Weise, irgendwie Pankat. 35,5. Megh. 88. क्यमपि - न auf keinen Fall R. 1, 22, 23. ad Megh. 86. - b) mit einiger Anstrengung, mit Mühe, mit genauer Noth: कद्यमपि तस्माद्येत: Pankar. 91, 6. 21, 13. 58, 19. कद्यमपि न प्राणी-विम्तः 69,2. 80,9. विस्ड्य जयमप्यमाम् Kumiras. 6,3. Месн. 3.23.105. Amar. 12.39.73. कार्य कारामिप dass. Daçak. in Benf. Chr. 187, 11. 197, 3. RATNAV. 4,9. — c) ein wenig, nur obenhin, etwas: कायमध्यव्यविभाग Çak. 73. सापि तस्मिन्दिने स्नात्तो कथमप्यकरेगिश्चरम् Kareis. 4,31. कथमप्य-बान्धवकृता auch nicht im Geringsten durch die Verwandten hervorgerusen Çik. 92. तयारि कायमपि ज्ञापते wenn man diese (die Grammatik) nur obenhin kennt Pankar. 4, 15. - Vgl. die ältere Form काशा und den Artikel 1. का.

कार्यभ्त (कार्यम् + भूत) adj. wie beschaffen? wie geartet? Sch. zu Kau-RAP. 1. fgg. Das subst. कार्यभाव m. beim Sch. zu Kâtj. Ça. 1,2,11.18. कार्यप्, कार्यपति Dhâtup. 35,1. episch auch med.; श्रचकारत् P. 7,4,93,

Sch. auch मचीकावत् Vop. 17, 4. 1) sich mit Jmd (instr. oder सङ् mit instr.) unterhalten: एवं ती क्यपती तु भूप: श्रम्भवतु: स्वनम् Brāhman. 1, 11. क-यपनैषधेन N. 20,31. स्देवेन सकैताते क्यपतीम् 16,29. क्यपिता - स्-मलेण चिरं सक् R. 2, 57, 1. कथित n. Gespräch N. 22, 29. श्राष्याम्यासा विश्रम्भक्रियानि Çix. 33, 3. — 2) erzählen, mittheilen, berichten, reden von, auseinandersetzen; mit dem acc. der Sache oder der Person, von der geredet wird: क्त ते कार्यापयामि मक्दाख्यानम् MBH. 1, 2206. कायपत्ति मियः कायाः R. 3,1,14. Hir. 8,18. क्रेर्ड्रुतवीर्यस्य कायाः — कायपस्व Выл. Р. 2,8,3. म्रत्र ते कायपिय्ये ऽमुमितिकासं प्रातनम् 4, 25,9. MBn. 1,2205. शीघ्रं अवयस्व 3,13180. कावयध्यं पद्यातवम् 2136. रा-मस्य – वृत्तं कायप R. 1,2,35. ततः सर्वे पद्मावृत्तं दमयह्या नलस्य च । भी-मायाकवयत् N. 24, 42. तत्तस्यै ऋवयति Çîx. 101, 7. 30, 13. ऋवयां वभुव 🗛 🖟 ६ १, १ १ . एतिहहत्ययान्यायं विस्तरेण तपाधन । जयपस्य न मेतितिः ज-ध्यमानेषु वन्ध्षु MB#.1,4488. म्रकीतिं चापि भृतानि कथपिष्यति ते ऽव्य-याम् Вылс. 2,34. 10,18. पालमेतस्य तपसः कायपधम् МВн. 1,8340. मातरं पितरं कुलम् । ऋयपस्व MBB. 1,5410. तं जनाः कयपत्तीक् पावदवित गा-रियम् 13,3168. दमयत्तीसकाशे त्यां कथिप्यामि N. 1,20. स चास्य कथया-मास शवरीं श्रमणां तरा R.1,1,55. सा खल् — मां मर्क्षः क्रविष्यति Ç:x. 7,18. कवयिष्यामि स्त्वोधम् Çaut. (Ba.) 1. पर्युतस्कां कवयिस — ताम् du schilderst sie als hestig verlangend VIKR. 34. एताइ सर्वमेतस्य कथ-पिला गमिष्यपि Vib. 168. partic. कायपत्त BHAG. 18,75. R. 1,8,28. med.: इमानि नारीवाक्यानि कथपानः पुनः पुनः мвн. 3,2906. — सनत्कुमारे। भग-वान्प्रा कथितवान्कयाम् R. 1,8,6. कथितवानस्मि च भवते Çik. 82,8. pass.: कथाक्केन वालानां नीतिस्तिदिक् कघ्यते Hrr. Pr. 7. न कि तप्यामि काट्यतः (partic. praes.) МВн. 3,636. तस्यैते कायिता ऋर्याः Çүнтасу. Up. 6,23. क्यं च व्यपि चैतेन कथितं स्यात् N. 22,13. याः (गिरः) कथिताः प्रा 11,6. कथितस्वर्गतिग्रा: RAGH. 12,15. — 3) angeben, ankündigen, verrathen: म्रात्मना परि वान्येपा गुरु तेत्रे ऽय वा खले । भत्तपत्तीं (गा) न क-यपेतिपवर्त चैत्र वत्सकम् ॥ M. 11, 114. N. (Bopp) 12, 29. Suça. 1, 104, 19. भवतं कथियता स मम MBn. 14, 157. नार्देन — कथितो उत्ति मे 144. य-खती राजकुले मां कथिष्यति Makku. 64,8. म्राकारसर्शं चेष्टितमेवास्य क्रयपति schon sein der äusseren Erscheinung entsprechendes Benehmen verräth es Çîk. 103, 18. पर्यथ्रणी तु नयने तस्याः कथयां बभुवतः सर्वम् Sin. D. 56,21. Vikr. 7. — 4) annehmen, statuiren: द्वादशादित्यान्काद्यप-त्तीक् धीराः МВн. 3, 10668. कांवता क्येताः संतेषेण दिसप्ततिः М. 7, 157. — 5) pass. genannt werden, heissen, für etwas gelten: तत्राजा त्रीक्प-स्त्रिवार्षिकाः सप्तवार्षिका वा कथ्यते Paridar. 167, 2. पूर्वजन्मकृतं कर्म त-दैवमिति कष्ट्यते Hrr. Pr. 32. कैारिल्यं कचमंचये u. s. w. मंदैव कयितं मायाप्रयोगः प्रिये Рамкат. I,205. कथितं माणवकक्रीउमिर्म् Çвот. 12. 20. 28. प्रमितानो ति कथिता कविभि: 29. — Schon Schlegel (Ind. Bibl. I, 337) hat die angebl. Wurzel কাম (sie wird zweisilbig geschrieben) auf क्यम् zurückgeführt und demnach als ursprüngliche Bed. aufgestellt: das Wie eines Ereignisses darlegen.

- म्रनु nacherwähnen: कियतानुकवितो उन्वादिष्ट: P. 6,2, 190, Sch. Vgl. म्रनुक्रयन.
- प्र verkünden, melden: पावित्र:श्रेपसं वाक्यं निर्वादित्रकथपाम्यक्स् R. 5,1,93. प्रकथटय गतः P. 6,4,56, Sch. Vgl. प्रकथन.
 - सम् erzählen, mittheilen, berichten, reden von, auseinandersetzen;